प्रसंगशः

आलोक मेहता

आतंक के राजनीतिक स्वामी

धर्म, तंत्र-मंत्र और दौलत के बल पर नेताओं तथा आतंकियों के 'गुरु' पर शिकंजे में देरी

यह समय का खेल है या तंत्र-मंत्र का राजनीतिक प्रभाव कि सी.बी.आई. को वर्षों बाद राजनेताओं से जुड़े कुख्यात तांत्रिक चंद्रास्वामी और कुछ आतंकवादी संगठनों के बीच धन के लेन-देन के प्रमाण अमेरिकी जासूसों के माध्यम से मिले हैं। मजेदार बात यह है कि यही चंद्रास्वामी अमेरिकी राष्ट्रपति, भारतीय प्रधानमंत्रियों, ब्रुनेई के सुल्तान, विश्व के जाने कितने नेताओं, शीर्ष अधिकारियों, धर्माचार्यों इत्यादि के साथ खिंचवाए गए फोटो दिखाकर सत्ता के बड़े-बड़े खेल खेलता रहा है। भारतीय गुप्तचर एजेंसियां इन दिनों अमेरिकी सहयोग से आतंकवादी गतिविधियों के तार पकड़ने में लगी हुई हैं। ऐसा नहीं है कि चंद्रास्वामी के खिलाफ मिले सबूतों से भारतीय एजेंसी सी.बी.आई. चौंकी हो क्योंकि उसके विरुद्ध गंभीर आरोपों और प्रमाणों की पचीसों फाइलें भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में धूल खाती रही हैं। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की 13 वर्ष पहले हुई हत्या के षड्यंत्र के मामले में आतंकवादियों और तांत्रिक चंद्रास्वामी के बीच धन के लेन-देन की कुछ जानकारियां अब अमेरिकी गुप्तचरों ने सी.बी.आई. को दी हैं। इस संबंध में सी.बी.आई. ने 23 देशों से जानकारियां मंगवाई थीं। अमेरिकी जासूसों ने सूचित किया है कि चंद्रास्वामी के बैंक खातों से आतंकवादी संगठनों के खातों में धन का हस्तांतरण हुआ। ये सूचनाएं मिलने के बाद सी.बी.आई. ने चंद्रास्वामी को दो बार सम्मन भेजे, पर वह नहीं पहुंचा। तीसरे सम्मन पर चंद्रास्वामी पहुंचा लेकिन उसने आतंकवादियों से अपने किसी संबंधों से इनकार किया। आखिर इतनी आसानी से वह अपने अपराध कैसे कबूलेगा? फिर उसके राजनीतिक संपर्कसूत्र अभी खत्म नहीं हुए हैं। बड़े-बड़े नेता अब भी उसकी चरण वंदना करने 'आश्रम' में पहुंचते हैं। यही नहीं, चंद्रास्वामी की जड़ों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे अधिकारी राजीव गांधी हत्याकांड पर जैन जांच आयोग की रिपोर्ट में 'स्वामीजी' के अलावा अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी सी.आई.ए. तथा इस्राइली गुप्तचर एजेंसी मोसाद से जुड़े पहलुओं का उल्लेख करते हुए गुत्थियां उलझने की आशंका व्यक्त करते हैं। आखिरकार विश्व कुख्यात बिन लादेन भी तो किसी समय सी.आई.ए. का ही मोहरा था।

चंद्रास्वामी केवल नेताओं से ही नहीं, हथियारों के सौदागरों से भी गहरे रिश्ते रखता था इसलिए भारत के ही नहीं, यूरोप और अमेरिका के नेता हथियार तथा राजनीतिक सौदेबाजी के लिए उसका उपयोग करते रहे हैं। इंदिरा गांधी के सत्ताकाल में सक्रिय हुए चंद्रास्वामी को जब राजीव गांधी ने अधिक घास नहीं डाली तो उसने ज्ञानी जैल सिंह और विद्याचरण शुक्ल जैसे परम प्रिय शिष्यों को उनका तख्ता पलटने के लिए जमकर उकसाया। पूर्व कानून मंत्री राम जेठमलानी द्वारा नवंबर 2000 में दिल्ली की एक अदालत में दिए गए बयान के अनुसार बोफोर्स तोप दलाली मामले की पड़ताल के लिए चंद्रास्वामी के एक शिष्य ने 50 हजार डॉलर भी यूरोप में उपलब्ध कराए थे। चंद्रास्वामी ने राजीव गांधी को बोफोर्स कांड में उलझाया तो सेंट किट्स कांड करके विश्वनाथ प्रताप सिंह की राजनीतिक पताका धूमिल करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इन दोनों कारनामों का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष लाभ उसके राजनीतिक शिष्य नरसिंह राव को ही मिला। पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव और चंद्रशेखर कभी चंद्रास्वामी की मोह-माया से मुक्त नहीं हो सके। इन दोनों के सत्ता में रहने पर चंद्रास्वामी बिना किसी सुरक्षा जांच-पड़ताल के सीधे प्रधानमंत्री निवास में घुसता रहा। यही नहीं, सरकार के बड़े अंतर्राष्ट्रीय सौदों पर उसकी 'मुहर' दिखने लगी। नरसिंह राव ने 'स्वामी' का सहारा लेकर कुछ बड़े राजनीतिज्ञों का प्रभाव कम किया। चंद्रास्वामी के 'रात्रि दरबार' में राव मंत्रिमंडल के कई सदस्य सेवा करते रहे। दावा तो यह किया जाता है कि अब भी कई दिग्गज कांग्रेसी और भाजपाई ही नहीं और नए-पुराने अफसर चंद्रास्वामी के पास पहुंचते हैं। मोबाइल युग में इंटरनेशनल कनेक्शन भी आसान हो गए हैं। भारतीय जनता पार्टी के कई नेताओं पर भी चंद्रास्वामी का जादू चलता रहा है। अयोध्या में मंदिर निर्माण के अभियान में किसी न किसी तरह जुड़े रहने की कोशिश चंद्रास्वामी ने की। जब नारायण दत्त तिवारी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, केंद्र की हरी झंडी लेकर चंद्रास्वामी ने अयोध्या में यज्ञ-पूजा पाठ का बड़ा तमाशा किया। यही नहीं, बाबरी मस्जिद गिरने के पहले साधु-संतों को बांटने के लिए नरसिंह राव द्वारा चंद्रास्वामी को अयोध्या भेजने के आरोप सामने आए हैं। फिर अप्रैल 1993 में भी चंद्रास्वामी ने 300 साधुओं और धर्माचार्यों को इकट्ठा कर एक प्रस्ताव पारित करवाया कि अयोध्या में जहां बाबरी मस्जिद खड़ी थी वहीं राम मंदिर बनकर रहेगा। शायद यही कारण है कि हर पार्टी के नेताओं का एक वर्ग ठगी, भ्रष्टाचार तथा आतंकवादी हत्याओं के गंभीरतम आरोपों के बावजूद उसे राहत दिलाता रहा। तिहाड़ जेल में थोड़ा कष्ट पाने के बाद चंद्रास्वामी की गतिविधियां कुछ समय के लिए कम हुईं लेकिन बाहर आते ही उसके पर लग गए।

भारतीय सत्ता व्यवस्था में चंद्रास्वामी अकेला तांत्रिक नहीं है। धर्म, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष आदि के नाम पर सत्ता को अपने इशारों पर नचाने वाले कई खिलाड़ी सक्रिय हैं। इससे यह गलतफहमी भी दूर होनी चाहिए कि आपराधिक अथवा आतंकवादी गतिविधियां चलाने वाले लोग केवल अन्य धर्मों से जुड़े हुए हैं। हाल के वर्षों में इस्लाम के धर्मावलंबियों का आतंकवादी गतिविधियों से अधिक जुड़े होने का शोर मचता रहा है। लेकिन हथियारों और मादक पदार्थों के धंधों से जुड़े लोगों का क्या कोई धर्म हो सकता है? आश्चर्य तो उन राजनेताओं की मूर्खतापूर्ण समझ पर होता है जो धर्म के नाम पर दुकान चलानेवाले धूर्त और पाखंडी लोगों का सहारा लेकर राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय राजनीति करते हैं। तांत्रिकों और स्वामियों की शरण में जाने की एक वजह यह बताई जाती है कि उनके आश्रमों में काला धन जमा करना आसान होता है। न टैक्स का झंझट और न ही छापे का खतरा। लेकिन उन्हें यह भी पता नहीं चल पाता कि उनका काला धन ऐसे आतंकवादियों तक पहुंच जाता है जो उनकी ही जान के प्यासे होते हैं। सत्ता की कृपादृष्टि रहने से तांत्रिक ठगों और कथित साधु-संन्यासियों को पुलिस कार्रवाई का खतरा कम से कम हो जाता है। फिर अधिकारी भी जाल में फंसे हुए हों तो कौन बाल बांका कर सकता है। कानूनी कार्रवाई में देरी से आधी जिंदगी निकल जाती है। धर्म का चोगा पहनकर ये अपराधी बड़ी संख्या में ऐसे चेले तैयार कर लेते हैं जो समाज और सत्ता-व्यवस्था को तहस-नहस करने में बड़ी भूमिका निभाते हैं। अंध-विश्वास पर आधारित सांप्रदायिक उन्माद प्रगति के रास्ते में बारूद साबित होता है। नेता यदि अपने स्वार्थों के लिए विध्वंसक दानव तैयार करेंगे तो बाद में उसके पैने दांतों से स्वयं कैसे बचेंगे? घर में बैठे विनाशकारी आतंकवादियों के पालनहारों पर नियंत्रण के लिए विदेशी गुप्तचर एजेंसियों की सहायता की जरूरत ही क्यों होनी चाहिए? भारत में उपलब्ध सबूतों के आधार पर उन्हें कठोरतम दंड क्यों नहीं दिया जा सकता? ●

भारतीय सत्ता व्यवस्था में चंद्रास्वामी अकेला तांत्रिक नहीं है। धर्म, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष आदि के नाम पर सत्ता को अपने इशारों पर नचाने वाले कई खिलाड़ी सक्रिय हैं।